

Class XI Session 2025-26

Subject - Hindi Core

Sample Question Paper - 7

निर्धारित समय: 3 घंटे

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश:

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-

- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)

[10]

बीसवीं शताब्दी में भारत ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी-उपनिवेशवादी व्यवस्था को अपने ऊपर से उतार फेंका। महात्मा गांधी की प्रेरणा से भारतीय जनता ने एक नए ढंग का संघर्ष कर अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। गांधीजी ने राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया। उनके लिए राजनैतिक और प्रशासनिक भेदभाव के खिलाफ लड़ना जितना महत्वपूर्ण था उतना ही महत्वपूर्ण था सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर के भेदभाव के विरुद्ध खड़ा होना। अपनी आत्मकथा में गांधीजी लिखते हैं- “ऐसे व्यापक सत्यनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए प्राणीमात्र के प्रति आत्मवत (अपने समान) प्रेम की भारी जरूरत है। इस सत्य को पाने की इच्छा करने वाला मनुष्य जीवन के एक भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। यही कारण है कि मेरी सत्यपूजा मुझे राजनैतिक क्षेत्र में घसीट ले गई। जो कहते हैं कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है, मैं निस्संकोच होकर कहता हूँ कि ये धर्म को नहीं जानते और मेरा विश्वास है कि यह बात कह कर मैं किसी तरह विनय की सीमा को लाँघ नहीं रहा हूँ। आज राजनीति को धर्म से अलग मानने वालों को गांधीजी की यह बात जरूर सुननी चाहिए। अपने इसी विश्वास के कारण गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को प्रमुखता से आगे बढ़ाया क्योंकि वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा। उनका मानना था कि करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ही स्वाधीन भारत की पहचान होनी चाहिए।

(i) गांधीजी ने किस प्रकार का संघर्ष कर भारत को स्वाधीनता दिलाई? (1)

- क) सशस्त्र संघर्ष
- ख) हिंसक संघर्ष
- ग) अहिंसक संघर्ष
- घ) सामरिक संघर्ष

(ii) गांधीजी के लिए किसके विरुद्ध खड़ा होना महत्वपूर्ण था? (1)

- क) विदेशी शासन के
- ख) सामाजिक और धार्मिक भेदभाव के
- ग) आर्थिक असमानता के
- घ) सांस्कृतिक विरासत के



(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): गांधीजी ने स्वाधीनता संग्राम में सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष को भी शामिल किया।

कथन (II): गांधीजी का मानना था कि केवल राजनीतिक मुक्ति ही भारत की समग्र मुक्ति है।

कथन (III): गांधीजी का विश्वास था कि राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता।

कथन (IV): गांधीजी ने स्वाधीन भारत की पहचान को आर्थिक उन्नति तक सीमित माना।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।

ख) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

घ) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

(iv) गांधीजी ने राजनीति के साथ किसका संघर्ष भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया? (1)

(v) गांधीजी के अनुसार स्वाधीन भारत की पहचान क्या होनी चाहिए? (2)

(vi) गांधीजी के अनुसार राजनीति और धर्म के बीच क्या संबंध है? (2)

(vii) गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को क्यों प्रमुखता से आगे बढ़ाया? (2)

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (8)

[8]

सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है।
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

i. (i) निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर उचित विकल्प का चयन कीजिए: (1)

काव्य के अनुसार, वीरता का शृंगार क्या है?

I. करुणा और क्षमा

II. सहिष्णुता और सहनशीलता

III. क्षमता और क्षमा

IV. प्रतिशोध और जागृति

विकल्प:

क) केवल I सही है।

ख) केवल II सही है।

ग) केवल III सही है।

घ) केवल IV सही है।

ii. 'प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त' का क्या अर्थ है? (1)

क) प्रतिशोध से शौर्य बढ़ता है

ख) प्रतिशोध शौर्य को कमजोर करता है

ग) प्रतिशोध शौर्य की शिखाओं को बुझाता है

घ) प्रतिशोध और शौर्य में कोई सम्बन्ध नहीं है

iii. कविता में 'हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है' का क्या संदर्भ है? (1)

कॉलम 1	कॉलम 2
I. वीरता का प्रतीक	1. पौरुष की जागृति
II. हारी हुई जाति की सहिष्णुता	2. अभिशाप
III. धर्मयुद्ध की पहचान	3. क्षमता और क्षमा

क) I - (1), II - (2), III - (3)

ख) I - (3), II - (2), III - (1)

ग) I - (2), II - (1), III - (3)

घ) I - (1), II - (3), III - (2)

iv. क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है? (1)

v. प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है? (2)

vi. सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया? (2)

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए। [6]

i. युवकों को बड़ों की नसीहत विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। [6]

ii. पुस्तकें पढ़ने की खत्म होती आदत विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। [6]

iii. भूकंप का वह दिन विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। [6]

4. आप निशा/निशीथ हैं। विद्यालय में दौड़ अभ्यास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु लगभग 100 शब्दों में प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। [5]

अथवा

बिजली विभाग के अधिकारी को बिजली बिल की शिकायत करते हुए लगभग 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए।

5. अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [11]

i. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

i. इंटरनेट की विशेषताएँ बताइए। [2]

ii. स्ववृत्त से आप क्या समझते हैं? [2]

iii. कोष कितने प्रकार के होते हैं? चरित्र कोष को स्पष्ट कीजिए। [2]

iv. डैडलाइन क्या है? [2]

v. कार्यसूची का निर्माण किस प्रकार और क्यों किया जाता है? [2]

ii. i. पटकथा के कितने प्रकार होते हैं? [3]

अथवा

i. डायरी कैसे और किस में लिखनी चाहिए? [3]

खंड- ग (आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दुःख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुःख नहीं फिर,
माँ की जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

i. इस पद्यांश में किस प्रेम का वर्णन हुआ है?

क) ईश्वरीय

ख) मातृ

ग) भ्रातृ

घ) सभी विकल्प सही हैं

ii. पसारा का अर्थ है-

क) प्रसार

ख) गोद

ग) सभी विकल्प सही हैं

घ) स्नेह

iii. भारत छोड़ो आन्दोलन कब हुआ?

क) 1942

ख) 1945

ग) 1941

घ) 1943

iv. कवि के परिवार में से कौन अनपढ़ है?

क) माता

ख) पिता

ग) चाची

घ) चाचा

v. माँ की स्नेह धारा का फैलाव कहाँ तक है?

क) सभी विकल्प सही हैं

ख) खेतों तक

ग) कारागृह तक

घ) घर तक

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)

[6]

i. जैसे बाढ़ी काष्ठ ही काटै अगिनि न काटै कोई।

[3]

सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई॥

इसके आधार पर बताइए कि कबीर की दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

ii. चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती कविता में विवाह और पति के बारे में चंपा की क्या धारणा है?

[3]

iii. आओ, मिलकर बचाएँ-कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

[3]

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)

[4]

i. सपनों का मर जाना किस प्रकार खतरनाक है?

[2]

ii. भाव व शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

[2]

अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गई, आनंद-फल होयी

iii. हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर कविता में कवयित्री ने ईश्वर और जूही के माध्यम से क्या उदाहरण दिया है?

[2]

9. अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

[5]

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढ़ा तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उनको अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला, नौकर

चाकर मुफ्त। कंपित स्वर में बोले-पंडित जी मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ।

i. मुंशी वंशीधर ने किस कागज़ को पढ़ा?

क) वसीयत

ख) अनुमति पत्र

ग) प्रमाण पत्र

घ) स्टॉप पत्र

ii. कागज़ पढ़ कर वंशीधर को कैसा लगा?

क) कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए

ख) क्रोध आया

ग) दुख हुआ

घ) आश्चर्य हुआ

iii. पंडित अलोपीदीन ने उन्हें किस पद पर नियुक्त किया था?

क) कोषाध्यक्ष

ख) स्थायी मैनेजर

ग) बाबू

घ) चपरासी

iv. वंशीधर को वेतन के अतिरिक्त कौन-कौन-सी सुविधाएँ मिली?

क) रहने को बंगला

ख) नौकर-चाकर

ग) सभी

घ) सवारी के लिए घोड़े

v. मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ। इस कथन के वक्ता कौन हैं?

क) बूढ़े मुंशी जी

ख) वंशीधर

ग) इनमें से कोई

घ) बदलू सिंह

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)

[6]

i. अपू के साथ ढाई साल पठित पाठ के आधार पर यह कह पाना कहाँ तक उचित है कि फिल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं? [3]

ii. लेखक द्वारा भारत माता की जय! का क्या अर्थ समझाया गया? इससे ग्रामीणों की क्या प्रतिक्रिया हुई? [3]

iii. रजनी पाठ में गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता- इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं? [3]

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)

[4]

i. मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है? [2]

ii. कैसर, ज़ार तथा नादिरशाह पर विदाई-संभाषण पाठ के आधार पर टिप्पणियाँ लिखिए। [2]

iii. गलता लोहा कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है। [2]

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (5 X 2 = 10 अंक)

[10]

i. लता मंगेशकर ने किन-किन विषयों पर गीत गाए हैं? [5]

ii. कुई के लिए कितने रस्से की जरूरत पड़ती है? राजस्थान की रजत बूँदें पाठ के आधार पर बताइए। [5]

iii. लेखिका को लेखन के लिए किन-किन लोगों ने उत्साहित किया? आलो-आँधारि पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए। [5]



Solution

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) अहिंसक संघर्ष
(ii) ख) सामाजिक और धार्मिक भेदभाव के
(iii) क) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।
(iv) गांधीजी ने राजनीति के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया।
(v) गांधीजी के अनुसार करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ही स्वाधीन भारत की पहचान होनी चाहिए।
(vi) गांधीजी के अनुसार राजनीति को धर्म से अलग मानना गलत है, वे कहते हैं कि राजनीति में धर्म का होना आवश्यक है।
(vii) गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को इसलिए प्रमुखता से आगे बढ़ाया क्योंकि वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा।
2. i. ग) केवल III सही है।
ii. क) प्रतिशोध से शौर्य बढ़ता है
iii. ख) I - (3), II - (2), III - (1)
iv. क्षमा असहाय होकर करने पर कलंक और क्षमतावान होने पर करने से शृंगार हो जाती है।
v. प्रतिशोध किसी के प्रति बदले की भावना को कहते हैं, यह आत्मसम्मान की रक्षा हेतु आवश्यक होता है।
vi. विजयी होकर क्षमा करना विभूषण है और पराजित होकर सहष्णुता दिखाना अभिशाप है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i)

"युवकों को बड़ों की नसीहत"

बड़ों का सम्मान करना सिर्फ एक सामाजिक शिष्टाचार नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक परंपराओं और नैतिक सिद्धांतों में निहित एक अनिवार्य व खूबसूरत व्यवहार है। जहाँ भारतीय संस्कृति हमेशा से बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाती है, वहीं छोटों के प्रति प्यार एवं स्नेह रखने व जताने का संस्कार भी हमारी संस्कृति का अटूट हिस्सा रहा है।

कई समाजों में, बुजुर्गों को ज्ञान और बुद्धि के भंडार के रूप में सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने जीवन भर का अनुभव संचित किया है। जो जीवन के बारे में उनके दृष्टिकोण को समृद्ध करता है। हमें बड़ों की बातों का अनुसरण इसलिए भी करना चाहिए, क्योंकि वह हमारे बड़े हैं, और वह हमारे लिए जो भी सोचेंगे या करेंगे, वह हमारे भले के लिए ही करेंगे। छोटी उम्र से ही हमारे बुजुर्ग हमें बेहतरीन जीवन देने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती है, यह जरूरी हो जाता है कि हम उन्हें वह प्यार, आराम और देखभाल दें जो उन्होंने वर्षों से हमें दी है।

आज युवा आधुनिक बनने के चक्कर में अपना मूल संस्कार खोता जा रहा है। उसके हृदय से बड़ों के प्रति मान-सम्मान खत्म होता जा रहा है। आज युवा अपने बुजुर्गों को अपने साथ रखने के बजाय उन्हें वृद्धाश्रम भेज रहा है। जबकि वह यह भूल रहा है कि या जीवन चक्र उसके हिस्से में भी आया, वह भी कभी उम्र के ढलान में होगा। इसलिए तुलसीदास ने कहा था कि - "करम प्रधान विस करि राखा, जो जस करि सो तस फलु चाखा"। अर्थात् ईश्वर ने कर्म को प्रधानता दी है, जो जैसा कर्म करेगा, उसे उसी अनुरूप फल की प्राप्ति होगी।

(ii)

'पुस्तकें पढ़ने की खत्म होती आदत'

भाग दौड़ भरी जिंदगी में समय का अभाव तथा सूचना क्रांति और दूरदर्शन के प्रभाव से पुस्तकें पढ़ने की आदत निरन्तर कम होती जा रही है। युवा पीढ़ी के बीच ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स एवं मनोरंजन के अन्य तकनीकी साधन का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप, पुस्तकों का अस्तित्व भी संकट में आने लगा है।

कागज़ की ये खुशबू

ये दोस्ती रूठने को है।

किताबों से इश्क करने की,

ये आखिरी सदी है शायद।

वास्तव में, पुस्तकें पढ़ना मस्तिष्क के लिए वैसा ही महत्व रखता है, जैसा व्यायाम का महत्व शरीर के लिए होता है। पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी दोस्त और मार्गदर्शक होती हैं। पुस्तकें दुनिया को देखने की एक खूबसूरत खिड़की होती हैं। पुस्तकों से गुजरना मानो दुनिया के श्रेष्ठ अनुभवों से गुजरना है। पुस्तकें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में गुणात्मक परिवर्तन आता है।

पुस्तकें पढ़ने की आदत हमें इसलिए भी करनी चाहिए, ताकि कम्प्यूटर या लैपटॉप की अपेक्षा पुस्तकों के अध्ययन द्वारा समय के सदुपयोग के साथ-साथ आँखों की सुरक्षा भी की जा सके। अतः हमें तकनीकी सुविधाओं की नकारात्मकता को भी ध्यान में रखते हुए पुस्तकें पढ़ने की आदत को अपने व्यवहार में शामिल करना होगा। ताकि ज्ञान भंडारण के साथ-साथ पुस्तकें हमारी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो।

(iii)

भूकंप का वह दिन

जब सृष्टि की गोद में जगती नींद थी, तब आया एक भयानक भूकंप का दिन। वह दिन मेरे जीवन में एक ऐसी घटना थी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। आचानक, धरातल हिलने लगा और आसमान गूँज उठा। मानवता के भय से अपने घरों से निकले लोग भागने लगे। मैंने अपने परिवार को अपने आस-पास इकट्ठा होते देखा और एक सुरक्षित स्थान की तलाश में हम सब तेजी से दौड़ते हुए एक पार्क में जा पहुँचे। भूकंप ने पूरी धरती



को हिला दिया था। आसमानी वास्तविकताओं की भीड़ ने मन को काँप दिया। हम अपने सुरक्षित स्थान पर बैठे रहे, ध्यान देते रहे और भगवान की कृपा की प्रार्थना करते रहे। वह समय काफी लंबा लगा, लेकिन आखिरकार भूकंप की गहराई घटी और हमारे चारों ओर की स्थिति स्थिर हुई। भूकंप का वह दिन मेरे लिए जीवन का एक महत्वपूर्ण सबक था। यह दिखा कि हमारी स्थिति कितनी अनिश्चित हो सकती है और हमारी कमजोरियाँ कितनी छोटी हो सकती हैं। उस दिन ने मुझे जीने का तात्पर्य और विश्वास दिया कि हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए और अपने परिवार और साथियों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

4. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

डीएवी पब्लिक स्कूल, रायपुर (छ.ग.)।

विषय- विद्यालय में दौड़ अभ्यास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु पत्र।

महाशय,

मेरा नाम निशीथ है। मैं कक्षा-12वीं (वाणिज्य संकाय) का छात्र हूँ। छात्र कल्याण परिषद् के अध्यक्ष होने के नाते आपसे सादर निवेदन यह है कि हम विद्यालय में दौड़ अभ्यास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना चाहते हैं। दौड़ अभ्यास छात्रों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में मदद करेगा और उनकी ऊर्जा को बढ़ाएगा। इसके लिए हमें सहायक कोच की आवश्यकता है, जो उन्हें सही तकनीक और तरीके सिखा सके।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप हमारे विद्यालय में दौड़ अभ्यास के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था कराने की कृपा करें। हम सदा आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय

निशीथ

अध्यक्ष, छात्र कल्याण परिषद्

डीएवी पब्लिक स्कूल, रायपुर (छ.ग.)।

5 जून, 2024

अथवा

सेवा में,

विद्युत अधिकारी,

विद्युत प्रदाय संस्थान,

द्वारका सेक्टर-7,

नई दिल्ली।

दिनांक : 18.5.20XX

विषय- बिजली के बिल में गड़बड़ी की शिकायत हेतु।

महोदय,

निवेदन है हम द्वारका सेक्टर-7 के निवासी बिजली बिल की अनियमितता से बहुत परेशान हैं। हमारे क्षेत्र में मीटर रीडर नियमित रूप से नहीं आते और मनचाही रीडिंग भरकर भेज देते हैं। जिस कारण हमारे बिजली के बिल आवश्यकता से अधिक आते हैं। कई बार शिकायत करने के बाद भी आपके विभाग की ओर से इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया। गत माह में परिवार सहित शहर से लगभग 20 दिन तक बाहर रहा फिर भी मेरा बिजली का बिल ₹ 7000 का आया है।

आशा है आप इस दिशा में उचित कदम उठाते हुए हमारी समस्या का निदान करने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

अनिल

अध्यक्ष,

मोहल्ला सुधार सभा,

सेक्टर - 7 द्वारका,

दिल्ली।

5. अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

(i) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिये: ($2 \times 4 = 8$)

i. इंटरनेट में प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद हैं। यह एक 'अंतर क्रियात्मक' (इंटरैक्टिव) माध्यम है। इसमें आप मूक दर्शक/श्रोता नहीं हैं।

ii. स्ववृत्त व्यक्ति के पहचान का एक माध्यम है। यह किसी नौकरी, पद आदि के आवेदन के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें व्यक्तिगत जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। आवेदक का जन्म, शैक्षणिक योग्यता, अंक, प्रतिशत, कार्य अनुभव आदि सभी समाहित होते हैं।

iii. कोष तीन प्रकार के होते हैं- विश्वज्ञान कोष, चरित्र कोष, साहित्य कोष।

चरित्र कोष: चरित्र कोष को व्यक्तिकोष भी कहते हैं। इसमें हमें विचारकों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों आदि के संक्षिप्त परिचय और उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। इसमें जानकारी का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण होता है।



- iv. किसी समाचार माध्यम में समाचार को प्रकाशित/प्रसारित होने के लिए प्राप्त होने की आखिरी समय-सीमा डेडलाइन कहलाती है। आमतौर पर डेडलाइन के बाद प्राप्त समाचार के प्रकाशित/प्रसारित होने की संभावना कम ही होती है।
- v. विभिन्न संस्थाओं और कार्यालयों में विभिन्न विषयों में विचार-विमर्श कर निर्णय में पहुँचने के लिए कई समितियों का गठन किया जाता है। इन समितियों में अध्यक्ष, सचिव के अतिरिक्त अन्य सदस्य भी होते हैं। जब किसी विषय पर विचार-विमर्श करना हो अथवा निर्णय लेना हो, समिति के सब सदस्य एक निश्चित समय में, पूर्व निश्चित स्थान पर बैठक का आयोजन करते हैं। बैठक प्रारम्भ होने से पहले विचारणीय मुद्दों की एक क्रमवार सूची बनाई जाती है जिसे कार्यसूची (एजेंडा) कहते हैं। कार्यसूची का निर्माण इसलिए किया जाता है ताकि केवल उन विषयों पर चर्चा की जाए जो विचारणीय हैं इससे समय की बचत तो होती ही है साथ में, विषय से भटकने की स्थिति भी नहीं आती।
- (ii) i. किसी फ़िल्म की पटकथा को किसी भी पूर्ववर्ती उपन्यास, नाटक, कहानी या उस सिनेमा विधा के लिए लिखी गई मूल रचना से रूपान्तरित किया जाता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पटकथा दृश्य-श्रव्य और कथन-कला आदि को लक्ष्य करके लिखी जाने वाली विधा होती है।

अथवा

- i. डायरी सोने से पूर्व दिनभर की गतिविधियों को स्मरण करते हुए लिखनी चाहिए। डायरी किसी नोट बुक अथवा पुरानी डायरी में लिखने वाले दिन की तिथि डाल कर लिखनी चाहिए। नोट बुक अथवा पुराने साल की डायरी में डायरी लिखना इसलिए उचित होता है क्योंकि कई बार नए साल की डायरी की तिथियों में दिया गया खाली पृष्ठ हमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कम लगता है अथवा कभी हम दो-चार पंक्तियों में ही अपनी बात लिखना चाहते हैं। इसलिए नए साल की डायरी के पृष्ठों की तिथियों तक स्वयं को सीमित रखने के स्थान पर यदि हम किसी नोटबुक अथवा पुराने साल की डायरी में अपनी सुविधा के अनुसार तिथियाँ डालकर अपने विचारों और अनुभवों को लिपिबद्ध करेंगे तो हम स्वयं को खुलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।

खंड- ग (आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दुःख में वह गद्दी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुःख नहीं फिर,
माँ की जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

- (i) **(ख)** मातृ

व्याख्या:

मातृ

- (ii) **(क)** प्रसार

व्याख्या:

प्रसार

- (iii) **(क)** 1942

व्याख्या:

कवि 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण जेल में बंद है। यद्यपि उसकी माँ को इस बात का गर्व भी है।

- (iv) **(क)** माता

व्याख्या:

माता

- (v) **(ग)** कारागृह तक

व्याख्या:

कारागृह तक

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)

- (i) प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि बड़ई काठ (लकड़ी) को काट सकता है, पर आग को नहीं काट सकता, इसी प्रकार ईश्वर घट-घट में व्याप्त है अर्थात् कबीर कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार आग को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता और न ही आरी से काटा जा सकता है, उसी प्रकार परमात्मा हम सभी के भीतर व्याप्त है। यहाँ कबीर का आध्यात्मिक पक्ष मुखर हो रहा है कि आत्मा (ईश्वर का रूप) अजर-अमर, सर्वव्यापक है। आत्मा को न मारा जा सकता है, न यह जन्म लेती है, इसे अग्नि जला नहीं सकती और पानी भिगो नहीं सकता। यह सर्वत्र व्याप्त है।
- (ii) विवाह की बात सुनते ही चंपा लजाकर शादी करने से मना करती है, परंतु जब पति की बात आती है तो वह उसे दूर न जाने और सदैव उसे अपने साथ रखने की बात कहती है। वह पति को अलग करने वाले कलकत्ता के विनाश की कामना तक करती है।
- (iii) इस कविता में दोनों/पक्षों का यथार्थ चित्रण हुआ है। बृहतर संदर्भ में यह कविता समाज में उन चीजों को बचाने की बात करती है जिनका होना स्वस्थ सामाजिक परिवेश के लिए जरूरी है। प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है, जो कविता का मूल



स्वरूप है।

कवयित्री को लगता है कि हम अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन, ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। प्राकृतिक नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँ-ये सब आधुनिकता का शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश में विकार बढ़ रहे हैं, जिन्हें हमें मिटाना है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। वह कहती है कि निराश होने की बात नहीं है, क्योंकि अभी भी हमारे पास भावनात्मक जुड़ाव, सादगी, भोलापन, विश्वास आदि बचाने के लिए बहुत कुछ बचा है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)

(i) सपने जीवन में नए रंग भरते हैं। वे मनुष्य को नया कार्यक्षेत्र देते हैं। जब व्यक्ति के सपने मर जाते हैं तो जीवन में कोई नयापन नहीं रहता है। उसके जीवन का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। बिना उद्देश्य के कोई जीवन नहीं होता। इस तरह सपनों के मर जाने से व्यक्ति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। यह स्थिति जीवन के लिए कभी अच्छी नहीं होती।

(ii) ■ **भाव सौंदर्य-** इस पद में मीरा की भक्ति अपनी चरम सीमा पर है। मीरा ने अपने आँसुओं के जल से सींचकर- सींचकर कृष्ण रूपी प्रेम की बेल बोई है और अब उस प्रेमरूपी बेल में फल आने शुरू हो गए हैं अर्थात् मीरा को अब आनंदाभूति होने लगी है।

शिल्प सौंदर्य- राजस्थानी मिश्रित व्रजभाषा में सुंदर अभिव्यक्ति है।

- प्रेमबेलि, आणंद फल, अंसुवन जल में साँगरूपक अलंकार का प्रयोग है।
- 'सींचि- सींचि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- बेलि बोयी- गेयता है, अनुप्रास अलंकार है।
- संगीतात्मकता है।

(iii) प्रस्तुत कविता में कवयित्री जूही के फूल और ईश्वर के माध्यम से यह संदेश देना चाहती है कि जिस प्रकार जूही का फूल अपनी खुशबू और सुंदरता से सब को मोहित कर लेता है, उसी प्रकार ईश्वर सभी मनुष्यों को आशीर्वाद और वरदान देते हैं। इसीलिए कवयित्री ने ईश्वर को जूही के फूल के समान बताया है।

9. अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

मुंशी वंशीधर ने उस कागज़ को पढ़ा तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उनको अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला, नौकर चाकर मुफ्त। कंपित स्वर में बोले-पंडित जी मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ।

(i) (घ) स्टॉप पत्र

व्याख्या: स्टॉप पत्र

(ii) (क) कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए

व्याख्या: कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए

(iii) (ख) स्थायी मैनेजर

व्याख्या: स्थायी मैनेजर

(iv) (ग) सभी

व्याख्या: सभी

(v) (ख) वंशीधर

व्याख्या: वंशीधर

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (3 X 2 = 6 अंक)

(i) सत्यजित राय ने यह फिल्म कला-माध्यम से बनाई थी। व्यावसायिक माध्यम से बनी फिल्म में लोग इतनी बारीकी से ध्यान नहीं रखते हैं। उन्होंने फिल्म के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। फिल्म के कलात्मक पक्ष को निभाने के लिए उन्होंने हर बात का बारीकी से ध्यान रखा। यही कारण है उनकी फिल्म में बनावटीपन का समावेश न होकर यथार्थ प्रतीत होता था। वे फिल्म से धन कमाने की लालसा नहीं रखते थे। उनकी फिल्म जीवन के करीब थी। अतः उसमें व्यावसायिक फिल्मों की तरह मसाला नहीं था।

(ii) लेखक ने समझाया कि 'भारत माता की जय!' अर्थात् भारत भूमि के साथ-साथ इसके कोटि-कोटि नागरिकों की जय है। तुम सब इसका अभिन्न अंग हो अर्थात् भारत की जय के साथ-साथ सभी भारतवासियों की भी जय है। भारत माता दरअसल ये सभी करोड़ों लोग हैं। जैसे-जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती। ऐसी मासूम प्रतिक्रिया, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो।

(iii) इस संवाद के संदर्भ में हम सबसे ज्यादा, अत्याचार करनेवाले को दोषी मानते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से चल रहे संसार में भी बहुत से कष्ट, दुख और तकलीफें हैं। अत्याचारी उन्हें अपने कारनामों से और बढ़ा देता है। वह स्वयं ऊपर से खुश दिखाई देता है, पर उसकी आत्मा तो जानती ही है कि वह गलती कर रहा है। उसके द्वारा जिसे सताया जा रहा है वह भी कष्ट उठा रहा है और उसकी आत्मा भी कष्ट उठाती है। इसलिए वह इन बातों से मुक्त होने के उपाय सोचता है, पर ऐसा कर नहीं पाता। अतः अत्याचारी ही कष्ट का प्रथम कारण होने की वजह से अधिक दोषी है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (2 X 2 = 4 अंक)

(i) मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मसीही अंदाज़ में रोटी पकाने की कला का बखान करते हैं। वे छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे खानदानी नानबाई हैं। उनका खानदान वर्षों से इस काम में लगा हुआ है। वे रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है। अन्य नानबाई सिर्फ रोटी पकाते हैं। वे नया कुछ नहीं कर पाते।

(ii) ■ **कैसर-** यह शब्द रोमन तानाशाह जूलियस सीज़र के नाम से बना है। कैसर शब्द का प्रयोग 'मनमानी करने वाले शासकों' के लिए किया जाता था।



- **जार-** यह भी जूलियस सीजर से बना शब्द है जो विशेष रूप से रूस के तानाशाह शासकों (16वीं सदी से 1917 तक) के लिए प्रयुक्त होता था। इस शब्द का पहली बार बुल्गेरियाई शासक (913 में) के लिए प्रयोग हुआ था। जार शब्द का प्रयोग रूस के तानाशाहों के लिए किया जाता था।
- **नादिरशाह-** यह 1736 से 1747 तक ईरान का शाह रहा। तानाशाही स्वरूप के कारण 'नेपोलियन ऑफ परशिया' के नाम से भी जाना जाता था। पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली को नादिरशाह ने भी आक्रमण के लिए भेजा था।

(iii) जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने जबान के चाबुक लगाते हुए कहा कि तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें? यह सच है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फूँकने और सान लगाने के कामों में लगा दिया था वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। इस प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (5 X 2 = 10 अंक)

- फ़िल्म संगीतवालों ने समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में एक प्रभावशाली परिवर्तन किया। इस संगीत की लचकदारी और रोचकता ही उसकी सामर्थ्य है। यहाँ का तंत्र ही अलग है। यहाँ नवनिर्मित की बहुत गुंजाइश है। इसी कारण लता मंगेशकर ने राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली, मराठी प्रदेशों के लोकगीतों को खूब गाया है। धूप का कौतुक करनेवाले पंजाबी लोकगीत, रुक्ष और निर्जल राजस्थान में पर्जन्य की याद दिलाने वाले गीत, पहाड़ों की घाटियों, खोरो में प्रतिध्वनि देनेवाले पहाड़ी गीत लता जी ने गाए हैं।
ऋतु चक्र समझाने वाले और खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषि गीत, ब्रजभूमि के गीत जिनमें सहजता समाई हुई है, को फिल्मों में खूब लिया गया और इसी परिणामस्वरूप लता जी द्वारा गाया भी गया। संगीत लोगप्रियता, उसका प्रचार और अभिरुचि के विकास का श्रेय लता जी को ही जाता है। कुमार गंधर्व का मानना है कि यदि लता जी के संगीत निर्देशकों के स्थान पर वे होते तो इतना सरल-सरल काम लता जैसी गायिका को नहीं देते। "मैं उन्हें और मुश्किल काम देता।" इसका कारण वे बताते हैं कि लता में और बहुत-सी संभावनाएँ छिपी हैं। उन्हें बाहर लाने के लिए उनसे और कठिन कार्य करवाया जाना चाहिए।
- लेखक बताता है कि यह चार-पाँच हाथ के व्यास तथा तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई की होती है। कुंई का प्राण है-चिनाई। इसमें हुई चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडल का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। एक हाथ की गहराई में रस्से के आठ-दस लपेटे लग जाते हैं। इसमें रस्से की कुल लंबाई डेढ़ सौ हाथ हो जाती है। यदि तीस हाथ गहरी कुंई की मिट्टी को थामने के लिए रस्सा बाँधना पड़े तो रस्से की लंबाई चार हजार हाथ के आसपास बैठती है।
- लेखिका को लेखन के लिए सबसे पहले तातुश ने प्रेरित किया। उन्होंने ही उसका परिचय कोलकाता और दिल्ली के लोगों से करवाया। इसके अतिरिक्त कोलकाता के जेलू आनंद, अध्यापिका शर्मिला आदि पत्र लिखकर उसे प्रोत्साहित करते थे। दिल्ली के रमेश बाबू जो उनके दोस्त थे उनसे फोन पर बातें करते थे।